

कबीर की साखियाँ

कबीरदास



दुख में सुमीरन सब करें, सुख में करे न कोय!
जो सुख में सुमिरन करें, तो दुख काहे को होय!!

SANT KABIR



Charanamrit

Lets Rebuild The Vision of Hinduism

www.charanamrit.com

साखी का अर्थ प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

- यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता है।



ऐसी बाणी बोलिये, मन का आपा खोइ ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख
होइ ॥

हमें बोली मीठी बोलनी चाहिए जिससे अपने
साथ—साथ दूसरों को भी सुख प्राप्त हो सके ।



कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि ।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि ।।

मृग की नाभि से कस्तूरी की सुगंध आने पर भी वह जंगल में भटकता रहता है । उसी प्रकार मन में बसने वाले ईश्वर को पाने के लिए लोग दुनिया में भटकते रहते हैं ।



जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं
नाँहि ।

सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक
देख्या माँहि ।।

ईश्वर के बिना अहंकार होता है लेकिन ज्ञान का दीपक
जलते ही ईश्वर की प्राप्ति होती है ,अज्ञानता समाप्त हो
जाती है ।



सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै ।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै ॥

कबीरदास के अनुसार संसार के लोग मोह—माया में फंसे रहते हैं लेकिन कबीर ईश्वर को पाने के लिए प्रयास रत हैं ।



बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ ।

राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ ।।

कबीरदास के अनुसार ईश्वर को न पाने से दुखी
व्यक्ति या तो मर जाता है या पागल हो जाता है ।

जिस प्रकार विरह रूपी सर्प शरीर में होने पर कोई मंत्र
काम नहीं करता है ।



निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै
सुभाइ ॥

निंदा करने वालों को अपने समीप रखने से बुराइयां
पता चल जाती हैं और दूर करना आसान हो जाता है ।



पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न
कोइ ।

ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ ।।

पुस्तकीय ज्ञान से कोई विद्वान नहीं हो जाता है। सभी
जीवों के प्रति प्रेम भाव करने वाला सच्चा ज्ञानी होता है।



हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि ।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे
साथि ।।

अपने मन के विकारों को दृढ़तापूर्वक समाप्त करके
ईश्वर की भक्ति करने के लिए तैयार हूँ। जो भी
मनोविकार समाप्त कर लें वे ईश्वर को प्राप्त कर सकते
हैं ।

